जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है !

शुध्द चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किये जातें है!

(पांडुशिला, सिंघासन , छत्र , चंवर प्रातिहार्य , जापमाला , मंगल कलश, पूजा बर्तन चंदोवा, तोरण, झारी)

नोट :- हमारे यहाँ घरो मे उपयोग हेतु , साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानो मे उपयोग हेतु शुध्द देशी घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है !

Contact:-
Sourabh Sagar Indore
9993602663
7722983010
sourabhjn1989@gmail.com

जैन

जयजिनेन्द्र

गाय का शुद्ध देशी घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानो को ध्यान में
रख कर बनाया गया शुद्ध देशी घी

घी ऐसा के दिल जीत जाये !

अब 1kg की पैकिंग में भी उपलब्ध

संपर्क सूत्र

Contact For Order

Sourabh Sagar Indore

Call & Whatsapp:

9993602663,7722983010

All India Home Delivery

समझदार बेटा

लेखिका
आर्यिका विज्ञानमती

प्रकाशक
धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
सागर (म. प्र.)

- कृति : समझदार बेटा
- लेखिका : आर्यिका विज्ञानमती
- संस्करण : द्वितीय, अक्टूबर, 2012
- आवृत्ति : 1100
- सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन
- प्राप्ति स्थान : धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
  बाहुबली कॉलोनी, सागर (म. प्र.)
  094249-51771
  dharmodayat@gmail.com
- मुद्रक : विकास आफसेट, भोपाल

कृति के गर्भ से

साहित्य समाज का दर्पण है, व्यक्ति गतिशील है नयी-नयी खोजों में विश्वास करता है। आज की नयी पीढ़ी नये-नये आकर्षक साहित्य पढ़ने में रुचि रखती है, यह कृति उसी का प्रतिरूप है। पूज्या आर्यिका श्री की यह कृति पारिवारिक सम्बन्धों की धरोहर है मुख्यत: माँ बेटों के सम्बन्धों पर। पाश्चात्य सभ्यता से विकृत संयुक्त परिवार को सम्हलने के लिए संबल प्रदान करती है। लेखिका ने भारतीय संस्कृति की सामंजस्य-परम्परा, समन्वय की शैली सौहार्द की रीति, सहिष्णुता गुण रूप पहलुओं को छूते हुए प्रस्तुत कृति में एक नौजवान किस प्रकार अपनी माँ और पत्नी को साथ लेकर चलता है और दोनों के 36 के आँकड़े को 63 में परिवर्तित करता है। इस पूरी प्रक्रिया में धर्म और धर्म गुरुओं का अवलम्बन लिया गया है, क्योंकि यह अकाट्य सत्य है कि संसार में हर समस्या का अंतत: समाधान धर्म और धर्मगुरुओं से ही मिलता है।

रचियत्री ने प्रस्तुत कृति को अपने सामाजिक अनुभव के आधार से चिंतन, मंथन मनन करके दिलोदिमाग से तन्मय होकर शब्दों के माध्यम से आप तक पहुँचाया है। वैसे पूज्या आर्यिका श्री तत्त्वार्थ सूत्र, 24 ठाणा, 53 भाव जैसे सिद्धान्त ग्रन्थों के संकलन-लेखन, चिन्तन, अध्ययन, अध्यापन में ही तल्लीन रहती है लेकिन फिर भी जब सामाजिक जनमानस में उठ रही पीड़ाओं को देखती हैं, सुनती हैं तो उनका मन आंदोलित हो उठता है और ऐसा लगता है कि ये संसारी प्राणी पापों से कैसे बचे, गृहस्थ में रहकर सुख शान्ति से कैसे जीवन व्यतीत करें, इसी भावना से भावित होकर सत्साहित्य सृजन की(संस्कार मंजूषा, शील मंजूषा, बहू कैसी, अच्छी-सास, अनर्थदण्ड क्या ? पलायन क्यों ?...आदि) श्रृंखला में यह कृति लिखी गयी है, कृति लिखकर पूज्य आर्यिका श्री ने समाज पर देश पर ही नहीं वरन् प्राणी मात्र पर बड़ा उपकार किया है।

मुझे विश्वास है पाठकगण कृति को पढ़कर अमन-चैन की जिंदगी जियेंगे विखरते परिवार जुड़ेंगे, माँ-बेटा, सास-बहू अंतिम समय तक साथ रहकर धर्म करते हुए आने वाली पीढ़ियों को नया संदेश, नया आदर्श प्रस्तुत करेंगे।

अंत में पू. आर्यिका श्री के चरणों में यही प्रार्थना करती हूँ कि हे गुरु माँ! आपके दिलोदिमाग रूपी सरोवर से निरंतर नूतन कृति रूप लहरें लहराती रहें और हम सभी उसमें समाहित होकर अपने पापों को प्रक्षालित करें, जीवन को सुसंस्कृत बनायें। इसी भावना से आपके श्री चरणों में बारम्बार नमन नमन नमन.....

संघस्थ आर्यिका आदित्यमती....

समझदार बेटा

पात्र परिचय

नगर	:	कलकत्ता
सेठ	:	अविनाश
सेठानी	:	आर्या
पुत्र	:	अचल
पुत्री	:	कृति
बहू	:	आस्था
अचल के मित्र	:	मधुर, भावेश
पुत्र का ससुराल	:	जयपुर
साला	:	चैत्य
चाचा	:	ध्येय
चाची	:	श्रिया
मयूरी	:	मित्र मधुर की माँ
पड़ोसिन	:	निर्मला

समझदार बेटा

अचल कलकत्ता महानगर के श्रेष्ठी अविनाशजी का सुपुत्र है। अविनाशजी के परिवार में धर्म के प्रति विशेष आकर्षण नहीं है। अचल की माँ श्रीमति आर्याजी कभी-कभी दीपावली, महावीर जयन्ती, शादी आदि के फंक्शन में भगवान् के दर्शन करने जाती हैं। अचल के पिता आर्याजी की अपेक्षा थोड़े ज्यादा धर्मात्मा हैं। अचल अपने परिवार में सबसे ज्यादा धर्मात्मा, समझदार, सभ्य तथा व्यवहार कुशल है। वह अपने मित्रों के साथ कभी-कभी भगवान् का अभिषेक भी करता है और साधुओं के चरणों में भी जाता है। एक रविवार को अविनाशजी अपने परिवार सहित होटल में जा रहे हैं -

आर्या : बेटा अचल! जल्दी करो 3 बज चुके हैं। ज्यादा देर हो जायेगी तो होटल में वेट करना पड़ेगा।

अचल : माँ, आज अपन कौन-सी होटल में चलेंगे ?

अविनाश : बेटा, आज अपन फाइव स्टार होटल में चलेंगे, वहाँ का भोजन बहुत जायकेदार बनता है, उस होटल को तो देखकर अच्छे-अच्छे धर्मात्माओं के मन भी पिघल जाते हैं।

अचल : हाँ, डैडी, बाहर से तो वह होटल बहुत अच्छी लगती है जहाँ पर बैठकर भोजन करते हैं, वहाँ तो ऐसा लगता है कि इतनी सफाई वाला स्थान कहीं नहीं होगा और भोजन देखो तो लगता है कि इतनी सफाई से तो अच्छे साधु-संतों का भोजन भी नहीं बनता होगा। लेकिन.....!

श्रिया : अचल, तुम लेकिन कहकर क्यों रुक गये ? क्या वहाँ जितना अच्छा भोजन दिखता है उतनी सफाई से बनता नहीं है ?

अचल : चाची! आप भी सफाई की बात पूछती हो ? क्या आप जैन होटल, हिन्दू होटल आदि का अर्थ जानती हो ? सच्चा जैन हो तो टल जा अर्थात् यहाँ मत आना, सच्चा हिन्दू हो तो टल जा। एक दिन मैं अंकल (ऋषभकुमार) जी की होटल पर पानी पीने गया था तो उन्होंने कहा - बेटा! ऊपर जाकर पानी

पीओ, मैं खुद अपनी होटल का पानी नहीं पीता हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि होटल का पानी कैसा होता है ?

आर्या : (जोर से) तो क्या अचल तुम्हें होटल नहीं चलना है, रहना भूखे, नहीं चलना है तो, मेरे से नहीं बनता रोज-रोज भोजन। बड़ी मुश्किल से तो रविवार आता है और उसमें भी तुम उपदेश देने बैठ गये।

अचल : माँ, मैंने कब कहा कि मैं होटल नहीं चल रहा हूँ, मैं तो डेडी को होटल की वास्तविकता बता रहा था। चलो, जल्दी-जल्दी सब गाड़ी में बैठो, होटल चलते हैं। सब होटल चले जाते हैं। (कुछ दिनों के बाद)

(एक दिन अचल होटल में जलेबी खाने गया था जब पानी पीने लगा तो उसमें बदबू आ रही थी, उसने (रोब से) छान-बीन करना शुरू किया।)

अचल : क्यों, बेटर आज पानी में इतनी बदबू क्यों आ रही है जरा ऊपर जाकर देखो, लगता है टंकी में कोई जानवर गिरकर मर गया है।

बेटर : भाई साहब, इतना रोब दिखाने की आवश्यकता नहीं है आप पानी की बात करते हैं, एक-एक चीज का ब्यौरा बताऊँगा तो लौटकर वापस कभी नहीं आओगे।

(ऐसा कहते हुए कचौड़ी, समोसा, जलेबी, आलूबंडा, नमकीन आदि में कैसे मसाले, कैसा बेसन एवं मैदा रहता है, इन सबका ब्यौरा बता देता है।)

अचल : नहीं सरासर झूठ, बेटर तुम सरासर झूठ बोलते हो। ऐसा हो ही नहीं सकता, मैं रोज होटल में सब चीजें खाता हूँ। मैंने तो आज तक किसी चीज में जीव-जन्तु नहीं देखे।

बेटर : (अकड़कर) ज्यादा बकवास करने की कोई आवश्यकता नहीं है, शुद्ध खाना है तो अपनी मम्मी से ही घर पर क्यों नहीं

बनवाकर खा लेते हो। एक तो हमारी होटल में आते हो ऊपर से बदनाम और करते हो।

(अचल चुपचाप उठकर घर आ जाता है, वह मन ही मन में संकल्प कर लेता है कि अब मैं होटल में कभी नहीं खाऊँगा।)

(अचल को उदास देखकर)

आर्या : बेटा, आज तो तुम बड़े उदास नजर आ रहे हो, क्या हो गया ?

अचल : मम्मी, आज मैं होटल में गया था वहाँ के बेटर ने मुझे कचौड़ी आदि की वस्तुएँ अर्थात् - नमक, मिर्च, धना, जीरा आदि दिखाई तो मुझे लगा कि हमने कैसी गन्दी-गन्दी चीजें खा लीं। आज तो मैंने उन चीजों को देखकर होटल में जाने का त्याग ही कर दिया।

आर्या : (गुस्से से) पागल तूने ये क्या किया ? कौन तेरे लिए प्रत्येक रविवार को रोटी बनाएगा। मैं कुछ नहीं करूँगी, तू अपनी रोटी बनाते रहना और खाते रहना।

(रविवार को अचल खिचड़ी बनाता है, उसने पहली बार खिचड़ी बनाई थी इसलिए अच्छी नहीं बनी, फिर भी वह जैसे-तैसे थोड़ी खिचड़ी खाता है तथा थोड़े फल खाकर पेट भर लेता है।)

(होटल से आकर अचल से)

आर्या : क्यों पण्डितजी, हो गया सोले का भोजन ? बना ली रोटी और खा ली ?

अचल : हाँ, मम्मी, रोटी तो मैंने नहीं बनाई लेकिन खिचड़ी जरूर बनाई थी।(कुकर लाकर दिखाता है।)

(कुकर देखकर हँसती हुई अविनाशजी की तरफ देखकर)

आर्या : देखो जी, ये आपके धर्मात्मा बेटे ने खिचड़ी बनाई है आप भी थोड़ा चखकर तो देखो।

अविनाश : क्यों मजाक बनाती हो उसका, फिर भी उसने तुम्हें परेशान तो

नहीं किया।

आर्या : हाँ, पहले भले ही परेशान नहीं किया, लेकिन अब तो इन बर्तनों को साफ करने के लिए परेशान होना ही पड़ेगा, क्योंकि आज तो बर्तन साफ करने वाली भी नहीं आयेगी।

अविनाश : इसमें परेशानी की क्या बात है ? घर के काम तो करने ही पड़ते हैं।

आर्या : अच्छा तो आप भी यही चाहते हैं कि मैं रविवार को भी फ्री नहीं रहूँ। मैंने तो सोचा था कि अचल दो-चार रविवार को कच्ची-पक्की खिचड़ी बनाकर खायेगा तो अपने आप अकल ठिकाने आ जायेगी, यह फिर से होटल जाने लगेगा लेकिन....।

(एक रविवार को अचल अपने मित्र के यहाँ जाता है।)

मयूरी : बेटा अचल तुम्हें देखकर आज तो मुझे लग रहा है कि तुम्हारा उपवास हो।

अचल : नहीं मम्मी, मैं अभी भोजन करके ही तो आ रहा हूँ।

मधुर : मम्मी, आपको पता नहीं है आजकल अचल ने होटल में जाना बन्द कर दिया है, इसलिए प्रत्येक रविवार को स्वयं खिचड़ी पकाकर खाता है। वो खिचड़ी भी ऐसी बनती है कि खाते ही रह जाओ। आज भी वही खिचड़ी खाकर आया होगा तभी तो इसका चेहरा उपवास जैसा लग रहा है।

मयूरी : (अचल की ओर देखती हुई) क्यों बेटा सही बात है ?

(अचल चुप रहता है।)

मयूरी : बेटा, तुम होटल में नहीं जाते हो तो प्रत्येक रविवार को अपने यहाँ आ जाया करो। मधुर और तुम कोई अलग-अलग नहीं हो। दोनों ही एक साथ बैठकर भोजन कर लेना।

मधुर : हाँ, अचल तुम जरूर घर आ जाना। सब टेंशन समाप्त हो जायेंगे।

अचल : हाँ, मधुर, बात तो सही है लेकिन मैं तो आज मम्मी से रोटी

बनाना सीखने के लिए आया हूँ।

मयूरी : अचल, मैं तुम्हें भोजन बनाना नहीं सिखलाऊँगी। तुम तो प्रत्येक रविवार यहीं आ जाना।

अचल : मम्मी, भले ही मैं प्रत्येक रविवार रोटी खाने यहाँ आ जाऊँगा, लेकिन व्यक्ति को भोजन बनाने की कला तो आना ही चाहिए। ताकि जीवन भर के लिए पराधीनता समाप्त हो जाये।

(अचल मधुर की मम्मी से भोजन बनाना सीख लेता है।)

(एक रविवार अचल, मधुर, भावेश आदि सब मिलकर भोजन बनाते हैं।)

(आर्या अविनाशजी आदि होटल में भोजन करके लौटते हैं।)

अचल : माँ, आज हम लोगों ने रोटी, दाल, सब्जी, चावल आदि बहुत सारी चीजें बनाई हैं।

भावेश : मम्मी, आज हमने जलेबी और कचौड़ी भी बनाई है।

मधुर : डेडी, आप हमारे हाथ का भोजन चख भी लोगे तो कभी होटल में जाने का मन नहीं होगा।

(चाचा, चाची, बहिन, मम्मी आदि उनकी बात सुनकर ठहाका लगाकर हँसते हैं।)

आर्या : अच्छा, तुम लोग इतने बड़े रसोइयाँ कब से बन गये ?

ध्येय : अचल, अच्छा लाओ अपने मिष्ठान्न, मैं तुम्हारे मिष्ठान्न जरूर खाऊँगा।

भावेश : चाचाजी, यदि आपको हमारी रसोई पसन्द आ गई तो आप क्या करेंगे ?

ध्येय : बेटा, तुम्हारे माल-टाल यदि मुझे अच्छे लगे तो मैं भी तुम्हारे से भोजन बनाना सीख लूँगा और मैं भी होटल में जाना छोड़ दूँगा।

श्रिया : अचल, तुम सबको होटल में जाना छुड़वा दोगे तो बेचारे होटल वाले का क्या होगा ? उसकी होटल कैसे चलेगी ?

भावेश : चाची, आप तो बड़ी परोपकारी हो, क्या दो-चार लोगों के होटल में न जाने से उसकी होटल बन्द हो जायेगी ?

आर्या : (जोर से) चलो बंद करो, ये फालतू की बातें, तुम होटल में जाओ या न जाओ, जिसको जाना होगा वो किसी से नहीं रुक सकता है।

(आर्या की बात सुनकर सन्नाटा छा जाता है। सब वहाँ से उठ जाते हैं।)

(अचल बड़ा हो जाता है उसकी शादी के लिए कुण्डलियाँ कई लोगों को दे दी जाती हैं।)

अविनाश : बेटा, अचल बम्बई में तुम्हारी शादी के लिए सम्बन्ध आया है। वे 15 लाख रुपये देने के लिए कह रहे थे।

अचल : डेडी, क्या आप मुझे बेच रहे हैं ?

अविनाश : बेटा, मैं तुम्हारी बात नहीं समझा, क्या तुम कोई माल हो जो बेचा और खरीदा जा सके ?

अचल : डेडी, मैं कोई माल नहीं हूँ, फिर आप मेरा मूल्य क्यों आंक रहे थे ? आदमी का तो कोई मूल्य होता ही नहीं है।

अविनाश : बेटा, तुम उल्टा अर्थ क्यों लेते हो, मैंने तुम्हें बेचने और खरीदने की बात ही कहाँ की थी, मैंने तो तेरी शादी की बात रखी थी।

अचल : डेडी, शादी में पैसे का सम्बन्ध ही क्या है ? शादी का सम्बन्ध तो जीवन भर सुख-दुःख में साथ देने वाले एक जीवन साथी से है। यह तो एक-दूसरे के साथ प्रेम की अद्‌भुत रश्म है।

अविनाश : अचल (बात पलटते हुए) मैं भी तो उसी रश्म के लिए कह रहा था। मैं सोच रहा था कोई योग्य लड़की ही तेरा जीवन साथी बने, जो तेरे जीवन में भी सुख बरसे और हमारी वृद्ध अवस्था भी अच्छी निकल जावे।

अचल : डेडी, तो फिर आप 15 लाख की बात क्यों कर रहे थे ?

(इस प्रकार पिता-पुत्र में तर्क-वितर्क चल रहे थे तभी)

आर्या : (गुस्से में) क्यों रे अचल, आजकल तो तू बड़ा होशियार हो गया है। अब तो तू डेडी से भी जबान लड़ाने लगा है। डेडी कौन-सा तेरा अहित कर रहे हैं ? 15 लाख तुम्हें शादी में मिल जायेंगे तो तुम ही सुख-शान्ति से जिओगे। तुम्हें ही फ्रिज, कूलर, ए. सी. आदि खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, हमें क्या मिल जायेगा इससे...।

अचल : (धीरे से) मम्मी, अपने घर में तो फ्रिज, कूलर, टी.व्ही. आदि सभी चीजें तो हैं ही। हमें और नये फ्रिज आदि खरीदने की क्या आवश्यकता है ? क्या शादी में फ्रिज आदि दिलवा करके आप मुझे अलग करना चाहती हो ?

आर्या : मूर्ख, तू समझता ही क्या है ? शादी जीवन का एक इंपोटेन्ट कार्य है, जो जीवन में केवल एक बार होता है लेकिन उसमें जीवन भर के लिए व्यवस्थाएँ बन जाती हैं।

अविनाश : अरे! माँ-बेटे उलझते क्यों हो ? अभी कौन-सी शादी तय हो चुकी है अभी तो 15 लाख देने वाले मिले हैं। 25 या 40 लाख देने वाले भी तो मिल सकते हैं। हम रिश्ता सबसे ज्यादा देने वाले के यहाँ ही निश्चित करेंगे ताकि अपने पूरे परिवार का जीवन सुख-शान्ति में व्यतीत हो।

अचल : डेडी, आप मेरी शादी अवश्य करना लेकिन मुझे बेचना मत। मेरे लिए किसी के सामने दहेज की भीख मत माँगना। यदि आपने मुझे 25-40 लाख के दहेज में बेच दिया तो मैं कभी आपके घर नहीं आऊँगा।

(अचल की बात सुनकर अविनाश एवं आर्या को तेज गुस्सा आ जाता है। मम्मी-डेडी कुछ कहें उसके पहले ही अचल खिसक जाता है।)

(एक दिन ध्येय, अविनाश आदि सब बैठे थे, अचल की शादी की बात चल रही थी)

ध्येय : भैय्या, अचल की शादी के लिए कहाँ-कहाँ लड़की देखी है।

अविनाश : एक लड़की अजमेर में देखी है, वे एक कमाण्डर, सोने का ब्रासलेट, चेन व अंगूठी अचल को देने के लिए कह रहे थे। एक लड़की बम्बई में एक सेठ की है, जो इससे एक कदम आगे है...।

ध्येय : तो क्या एक भी लड़की पसन्द नहीं आई ?

अविनाश : ध्येय, लड़कियाँ तो सभी एक ही जैसी होती हैं, इसमें क्या पसन्द आना और नहीं आना। अपने को तो ऐसा घर मिले कि अचल का जीवन बन जावे।

ध्येय : फिर भी अचल के योग्य हेल्थ-हाइट, रंग-रूप भी होना चाहिए।

अविनाश : अरे मन मिल जावे तो सब सेटिंग अपने आप हो जाती है।

ध्येय : वो तो ठीक है लेकिन लड़की में कम से कम इतने संस्कार तो होने चाहिए कि वह वृद्धावस्था में आपकी थोड़ी सेवा कर दे।

कृति : डेडी, शादी के पहले क्या अचल भैय्या लड़की देखने नहीं जायेंगे, मैं भी उनके साथ भाभी को देखने अवश्य जाऊँगी।

अविनाश : बेटी, लड़की को देखने की बात तो अन्त में है। पहले मुझे एवं तेरी मम्मी के मन का घर और देनदार तो मिल जावे।

अचल : डेडी, क्या आप सच में मुझे बेचने की तैयारी कर रहे हैं ?

अविनाश : नहीं बेटा, मैं सोच रहा हूँ कि तेरी शादी में हमें कुछ खर्च भी नहीं करना पड़े और अच्छी अपने मन की लड़की भी मिल जावे।

अचल : डेडी, ठीक है यदि आपको मेरी शादी में खर्च नहीं करना है तो मैं अपनी पसन्द की लड़की से लव-मेरिज करके आपके लिए बहू ले आऊँगा।

(अचल के लव-मेरिज की बात सुनकर अविनाश, ध्येय, आर्या आदि सभी सन्न रह जाते हैं। अविनाश के दिमाग में अचल के लव-मेरिज की बात चक्कर काटने लगती है।)

एक दिन आर्या और अविनाशजी अचल के विचारों के अनुसार एक मध्यम परिवार की लड़की से अचल की शादी का प्रस्ताव रखते हैं। अचल की शादी बिना किसी दहेज और दिखावे के सम्पन्न हो जाती है।

(आस्था जयपुर के आदीशजी की धार्मिक संस्कारों से रहित इकलौती लाड़ली बेटी है।)

(वह घर का कोई काम करना नहीं चाहती है।)

आर्या : आस्था, जरा दो-चार प्लेटे साफ करके दे दो मैं सबको नास्ता दे देती हूँ।

आस्था : मम्मी मैंने तो अपने घर में ही कभी बर्तन साफ नहीं किये, अब क्या बर्तन साफ करूँगी।

आर्या : बेटी, तू इतने दिन बच्ची थी अब तुम बहू हो। अब तो तुम्हें घर के सब काम करने ही पड़ेंगे।

आस्था : मम्मी जी, अब तो मुझे और भी काम नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि मेरी शादी इतने बड़े घर में हुई है फिर मुझे काम करने की आवश्यकता ही क्या है ?

आर्या : अच्छा तो तुम मेरे घर में रानी बनकर आई हो, यह सब अक्कड़ यहाँ नहीं चलेगी। कोई तेरे पापा ने हमें लाखों रुपये नहीं दिये हैं, जिनसे वेतन देकर मैं घर में चार नौकर और रख लूँ। मैं तो सोच रही हूँ कि अब तुम काम करने वाली आ गई हो, इसलिए पहले की दोनों नौकरानियों को भी अलग कर दूँ।

आस्था : तो क्या मम्मी, मेरे पापा ने दहेज नहीं दिया। इसका अर्थ मैं आपके घर में नौकरानी बनकर आई हूँ ?

आर्या : आस्था, भले ही तुम नौकरानी बनकर नहीं आई, लेकिन तुम्हें घर के काम तो बिना तनख्वाह के करने ही पड़ेंगे।

(अचल और आस्था दोनों अपने कमरे में)

आस्था : (गुस्से में) आज आपकी मम्मी ने मुझे नौकरानी कह दिया।

मैं अब इस घर में नहीं रहूँगी। आप कल ही एक मकान किराये पर लेने के लिए देख लीजिए। मैं दो-चार दिन में सब सामग्रियाँ इकट्ठी कर लेती हूँ।

(अचल चुपचाप सुनता रहता है, कोई उत्तर नहीं देता है फिर भी आस्था का बोलना बंद नहीं होता है तो अचल उठकर कमरे के बाहर चला जाता है।)

(आस्था बड़बड़ाती हुई) इनके सामने तो कितना ही कहते रहो जूँ तक नहीं रेंगती है, भगवान् जाने विधाता ने इनको किससे गढ़ा है। थोड़ा कुछ कहना सुनना तो बहुत दूर उठकर भाग ही गये। 5-7 मिनट बैठे भी रहे तो लग रहा था मानो बहरे ही हो गये हो।

(इस प्रकार बोलते-बोलते उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। रोते-रोते सो जाती है।)

(एक दिन आस्था और आर्या बातें कर रहीं थी। बातों ही बातों में उनकी लड़ाई हो जाती है।)

आर्या : क्या सिखाया तेरी माँ ने, ऐसा ही तो बोलना सिखाया है, अच्छा बोलेगी भी कहाँ से तेरे माँ-बाप को भी तो सभ्यता से बोलना नहीं आता है।

आस्था : हाँ, पता है आप और आपके पीहर वाले कितना अच्छा बोलते हैं, जब देखो सास-बहू की और बहू-सास की बुराई ही करती रहती है। जब देखो घर में क्लेश ही मचा रहता है।

आर्या : (जोर से) चुप हो जा, बन्द कर अपना मुँह, आगे बोली तो जबान खींच लूँगी...।

आस्था : बड़ी आई हो जबान खींचने वाली...।

(तभी अचल आ जाता है। दोनों को लड़ते देख उल्टे पैर लौट जाता है।)

(बहुत देर तक दोनों की लड़ाई होती रहती है।)

आर्या : (रोती हुई अचल को) बेटा, मेरा तो जीवन ही बर्बाद हो गया, आज तो आस्था ऐसा कड़वा बोल रही थी कि कान के पर्दे ही फट जाते। अब तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं तो फाँसी लगाकर मर जाऊँ या आग लगाकर जल जाऊँ। तू तो इस दुष्टा को जयपुर ले जाकर पटक आ। मैं तो एक सेकेण्ड के लिए भी उसके साथ नहीं रह सकती। मुझे तो उसका मुँह देखना भी जहर जैसा लगता है।

(इस प्रकार कहती-कहती करुण क्रन्दन करने लगती है।)

(अचल चुपचाप माँ की बात अनसुनी सी करता हुआ, न्यूज पेपर पढ़ता रहता है।)

आर्या : अरे अचल, क्या अब तू भी मेरा नहीं रहा है ? तू कुछ बोलता क्यों नहीं है ? क्या आस्था ही तेरी सब कुछ हो गई है क्या तू दो चाँटे मारकर उसे सीधी नहीं कर सकता है, क्या तू अपनी माँ का इतना अपमान होते हुए देख सकता है...?

(अचल वहीं रखा चिमटा उठाकर मारने के लिहाजे से आस्था की तरफ इस ढंग से फेंकता है कि आस्था को लगे भी नहीं और माँ की संतुष्टि भी हो जावे।)

(आस्था रोती हुई कमरे में चली जाती है।)

(कुछ दिनों के बाद नगर में एक तरफ से मुनि संघ तथा दूसरी तरफ आर्यिका संघ भी आता है।)

(अचल अपने मित्रों के साथ दूसरे गाँव तक मुनि संघ की व्यवस्था, वैयावृत्ति एवं साथ में विहार करने के लिए जाता है।)

अचल : आस्था, अबकी बार तो मुझे आचार्यश्री का कमण्डलु उठाने को भी मिला और जब मैंने आचार्यश्री के चरण छुए तो इतना आनन्द आया कि कुछ पूछो ही नहीं।

आस्था : आपको आचार्यश्री के इतने पास जाने का मौका कैसे मिल गया। इतनी भीड़ में आपका नम्बर आ गया, यह बड़े आश्चर्य की बात है, क्या आपको आचार्यश्री के इतना पास जाने से डर

नहीं लगा ?

अचल : डर तो बहुत लग रहा था लेकिन सब लोग जा रहे थे, जो हम तीनों भी एक साथ घुस गये और जब हम चरण छू रहे थे तब आचार्य श्री ने हमारी तरफ देखा तब तो हम सब कुछ भूल गये कि हम कहाँ हैं ?

आस्था : क्या आपको देखकर आचार्यश्री कुछ बोले भी थे ?

अचल : आचार्यश्री तो कुछ नहीं बोले मात्र मुस्कुरा दिये थे। उनकी मुस्कुराहट में ही सब कुछ मिल गया। दूसरे छोटे महाराज बहुत अच्छे से बोले थे। हमें उन महाराज के पास बहुत अच्छा लगा।

आस्था : क्या माता जी के दर्शन करने नहीं गये ?

अचल : हाँ, हम माताजी के पास भी गये। माताजी तो इतना प्रेम से बोली कि कभी मम्मी ने इतना प्रेम से नहीं समझाया होगा।

आस्था : फिर तो मैं भी माताजी के पास अवश्य जाऊँगी। क्या आप मुझे माताजी के पास ले जाओगे।

अचल : (आश्चर्य से) अरे आज तेरे भाव माताजी के पास जाने के कैसे हो गये।

आस्था : क्यों, क्या मैं जीव नहीं हूँ, क्या मुझे अपने भविष्य की चिन्ता नहीं लगती है।

अचल : तुम अपना भविष्य सुधारना चाहती हो तो मैं तुम्हें अवश्य कल ही अपनी माताजी के पास ले जाऊँगा।

(अचल, आस्था, भावेश, मधुर, अविनाश, आर्या आदि सभी महाराज के दर्शन करने जाते हैं।)

(आचार्यश्री और महाराज के दर्शन करके सभी आर्यिका संघ के पास जाकर वन्दामि करके बैठ जाते हैं।)

अचल : (संकेत करते हुए) माताजी ये मेरी मम्मी हैं, ये डेडी हैं और ये बहिन है...।

भावेश : माताजी ये हमारी आस्था भाभी है।

माताजी : अच्छा, सास-बहू में अच्छी दोस्ती है कि लड़ाई भी होती है ?

अविनाश : माताजी, जहाँ दो बर्तन होते हैं तो बजते ही हैं, हमारे ये बर्तन तो अच्छे से ही बजते हैं, क्योंकि दोनों ही बर्तन अच्छे मजबूत हैं।

(ससुर की बात सुनकर आस्था शर्मिन्दा हो जाती है।)

आर्यिका : तुम लोगों ने सब परिचय करवा दिया लेकिन तुमने यह तो नहीं बताया कि तुम लोग आ कहाँ से रहे हो ?

अचल : माताजी हम लोग यहीं कलकत्ता में ही रहते हैं।

आर्यिका : क्या, आज तुम लोग पहली बार दर्शन करने आये हो ?

अचल : नहीं माताजी, एक दिन हम मम्मी-पापा आदि सभी आचार्य महाराज के दर्शन करने आये थे। उस दिन आपके पास आ रहे थे लेकिन शाम हो गई थी इसलिए नहीं आ पाये।

आर्यिका : क्या तुम लोग कभी मंदिर भी नहीं जाते हो, जब मंदिर आते हो तभी दर्शन कर लिया करो और थोड़े आचार्यश्री के प्रवचन भी सुन लिया करो।

(अचल और आस्था चुपचाप नीचे दृष्टि किए बैठे रहते हैं।)

आर्यिका : तो क्या तुम लोग सच में कभी मंदिर नहीं जाते हो ?

अचल : माताजी, मैं तो कभी कभी मंदिर जाता हूँ, आचार्यश्री के आने के बाद तो मैं कई बार मंदिर आ गया।

आर्यिका : तो क्या आस्था तुम कभी मंदिर नहीं जाती हो।

आस्था : माताजी, मुझे ये दिखावे का धर्म पसन्द नहीं है, मैं तो अपना मन साफ रखती हूँ। एक तरफ इतने सारे छल-कपट, चोरी, बेईमानी करते रहना और दूसरी तरफ धर्म के ढ़ोंग करते रहना कोई अच्छा काम तो नहीं है।

आर्यिका : तो क्या आस्था! तुझे विश्वास है कि धर्म करने वाले छली-पापी ही होते हैं, क्या सीता के अग्नि का पानी छल-कपट

करते हुए धर्म करने से हुआ ? क्या हम लोग सभी छली हैं, हमारा मन साफ नहीं है, क्या हम लोग मात्र दिखावे का धर्म करते हैं ?

आस्था : नहीं, माताजी, आपकी बात अलग है। आप तो बहुत महान् हैं, मैंने तो हमारे जैसे सामान्य लोगों के लिए कहा था।

आर्यिका : बेटी, तुम अपना मन भी साफ रखा करो और मंदिर भी जाया करो। इसमें तुम्हें दोहरा लाभ होगा। एक तो तुम्हें देखकर दूसरे लोग भी अपना मन साफ रखने लगेंगे और दूसरा तुम्हें देखकर मंदिर नहीं आने वाले भी यह सोचकर मंदिर आने लगेंगे कि इतने धनाढ्य घर की बहू भी हमेशा मन्दिर जाती है तो हमें तो जाना ही चाहिए।

(बड़े प्रेम से समझाने के बाद भी आस्था ने आर्यिकाजी की बातें सुनी-अनसुनी कर दी।)

(एक दिन फिर से आस्था और आर्या के बीच लड़ाई हो जाती है।)

(आस्था किसी काम से पड़ोसी के यहाँ जाती है।)

निर्मला : आस्था, क्या आज तुम्हारी सास से बहुत लड़ाई हुई थी, बड़ी जोर-जोर से दोनों के चिल्लाने की आवाज आ रही थी। मुझे तो तुम लोगों का लड़ना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है। क्यों दोनों झगड़ती रहती हो ? तुम्हारे घर में क्या कमी है, जिसको लेकर लड़ाई हो ?

(आस्था निर्मला की बात सुनकर अन्दर ही अन्दर तिलमिला जाती है फिर भी कड़वा घूँट पीती हुई।)

आस्था : आंटी जी वास्तव में न हमारे घर में कुछ काम ही है और न कुछ कमी ही है, लेकिन भाग्य में शान्ति नहीं लिखी हो तो कहाँ से मिल सकती है ?

निर्मला : आस्था, भाग्य बनाना तो हमारे हाथ में है, यदि हम कषाय नहीं

करें, किसी की बात का बराबरी से उत्तर नहीं दें तो एक क्षण में हमारे भाग्य में शान्ति लिख जायेगी और यदि हम संक्लेश करते रहे, छोटी-छोटी बातों को लेकर एक-दूसरे से उलझते रहे तो हमारे भाग्य में लिखी हुई शान्ति भी तो अशान्ति में बदल सकती है।

आस्था : आंटी जी, बात तो सही है लेकिन मेरा तो भाग्य ही खराब है, मेरे भाग्य में तो शान्ति लिखी ही नहीं है, तभी तो मुझे ऐसी सास मिली कि जो हर-क्षण श्वांस लेने के लिए तत्पर रहती है।

निर्मला : बेटी मैं तो मानती हूँ कि तुम कितनी भाग्यशाली हो जो तुझे अचल जैसा समझदार और व्यसनमुक्त पति मिला है। आज के जमाने में और इस कलकत्ता जैसे महानगर में शराब नहीं पीने वाला लड़का मिलना बहुत कठिन है। उसमें भी धनाढ्य परिवारों के लड़कों को वेश्या और शराब तो सबसे पहले आवश्यक होती है।

आस्था : (खुश होती हुई) हाँ आंटी जी, वे तो बहुत अच्छे हैं लेकिन मम्मीजी उनके भी तो चौबीस घण्टे कान भरती रहती हैं, उनसे भी तो मम्मी कई बार लड़ पड़ती हैं, लेकिन वे तो देवता के अवतार हैं, जो एक शब्द तक नहीं बोलते हैं।

निर्मला : तो क्या इतने दिनों में तू अचल से इतना भी नहीं सीख पाई। जैसे अचल माँ की बात का कोई उत्तर नहीं देता है, वैसे ही तू भी उत्तर नहीं दे तो लड़ाई आगे बढ़े ही क्यों? कहा भी है - **''कम खाओ गम खाओ, न हकीम के पास जाओ न हाकिम के पास जाओ''**

व्यक्ति थोड़ा गम खाना/ सहन करना सीख जाये तो भी बहुत सुखी हो सकता है, लेकिन ये मान कषाय इतनी खराब है कि व्यक्ति को गम खाने ही नहीं देती है।

आस्था : हाँ, आंटी जी, गम खाना बहुत कठिन है, मैं भी चाहती हूँ कि

कोई उत्तर न दूँ लेकिन अति हो जाती है तो मुझे उत्तर देना पड़ता है। फिर भी आंटी जी मैं आपकी बात का पूरा ध्यान रखूँगी।

(अचल और आस्था कमरे में बातें कर रहे हैं।)

आस्था : आज तो निर्मला आंटी आपकी बहुत प्रशंसा कर रही थी मैं तो आपकी प्रशंसा सुनकर गद्‌गद् हो गई।

आस्था : मैंने तो ऐसा कोई अच्छा काम नहीं किया, जिसकी प्रशंसा की जावे।

आस्था : नहीं, पहले तो आप व्यसनमुक्त हो, दूसरी बात धनाढ्य के पुत्र होकर भी घमण्डी नहीं हो और सबसे बड़ा गुण तो ये है कि आप माँ की इतनी कड़वी-मीठी बातें सुनकर भी कभी पलटकर जवाब नहीं देते हो।

अचल : आस्था, इसमें कौन-सा बड़ा काम है बड़े कुछ भी कहें और कुछ भी करें, हमें उन्हें पलटकर जवाब नहीं देना चाहिए। यदि बड़ों को सुधारना है तो अपने आचरण से सुधारना चाहिए, वचनों से बोलकर नहीं।

आस्था : तो क्या छोटों को गूंगे बन जाना चाहिए। झूठी और असत्य बातों को कैसे सहन किया जाये। अपनी गलती हो तो सब कुछ सुना भी जा सकता है और कोई दो चाँटे भी मारे तो सहन हो जाता है, लेकिन झूठी बात तो एक क्षण के लिए भी किसी को सहन नहीं होती है।

अचल : आस्था, तेरी बात सही है लेकिन लड़-झगड़कर किसी के ऊपर सत्य को थोपा तो नहीं जा सकता है।

आस्था : अरे, इस जमाने में एक सुनकर चुप रहो तो सामने वाले के हौसले बढ़ते हैं, वह दूसरे दिन चार और तीसरे दिन दस सुनाकर दबाने की कोशिश करता है। मैं तो सोचती हूँ कि ईंट का जवाब पत्थर से दो ताकि सामने वाले की जबान बन्द हो जाये।

अचल : आस्था, ये ही तो तुम्हारी गलत धारणा है यदि एक पक्ष मौन रहे, सामने वाले की बात का जवाब नहीं दे तो लड़ाई हो ही कैसे सकती है। एक अकेला व्यक्ति कब तक बोलता रहेगा, दूसरे के नहीं बोलने पर वह अपने आप चुप हो जायेगा।

आस्था : आपके विचार से तो मैं भी आप जैसे ही सब सुनती रहूँ, मम्मी को कुछ जवाब नहीं दूँ। फिर तो हो गया पक्का आपका और मेरा दोनों का कल्याण।

अचल : हाँ, मेरे विचार तो यही है कि तुम मम्मी की किसी भी कड़वी बात का उत्तर नहीं दो। मम्मी अपने-आप सुधर जायेंगी। तुम दोनों का लड़ाई-झगड़ा अपने-आप समाप्त हो जायेगा।

(आस्था धीरे-धीरे कुछ-कुछ बड़बड़ाती है।)

अचल : सच कह रहा हूँ, आस्था तुम केवल एक महीने के लिए ऐसा करके देख लो, तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा।

(एक दिन आस्था किसी की शादी में जाती है, शादी में गीत गाने का कार्यक्रम लगभग पूरा सा हो जाता है वहीं बैठी-बैठी दो-चार महिलाएँ आस्था की ओर देखती हुई।)

पहली : क्या तू जानती है यह किसकी बहू है ?

दूसरी : हाँ, हाँ, क्यों नहीं जानती मैं तो इसे अच्छी तरह जानती हूँ। यह अविनाश जी के पुत्र अचल की पत्नी है।

तीसरी : हाँ, भाई अचल तो सच में अचल है वो तो माता-पिता की सेवा करने में हर समय तत्पर रहने वाला सच्चा श्रवणकुमार है।

चौथी : हाँ, उसके माँ-बाप तो कभी मंदिर तक नहीं आते हैं लेकिन वह तो धार्मिक कार्यक्रमों में पूरा सहयोग करता है।

पहली : अरे, पता नहीं कौन से पुण्य के उदय से आर्या जैसी घमण्डी महिला को इतना समझदार बेटा हो गया। वह कितना भी उल्टा-सीधा सुना दे, चुपचाप सुनता रहता है।

दूसरी : सच कही तुमने, पहले मेरी बेटी की इससे शादी की बात चल रही थी। 10-15 लाख के बिना तो शादी की बात करने के लिए तैयार नहीं हो रही थी।

तीसरी : तो क्या आस्था के पिताजी ने इससे भी ज्यादा दहेज दिया है ?

दूसरी : नहीं दिया, माँ की भावना तो थी कि दहेज से घर-भर लेने की, लेकिन अचल जैसा बेटा तो अपनी बात पर अड़ा रहा कि मैं तो बिना दहेज के ही किसी गरीब की लड़की से शादी करूँगा।

पहली : तो क्या, आस्था के पापा के पास बिल्कुल पैसा नहीं है उन्होंने कुछ भी दहेज नहीं दिया ?

दूसरी : हाँ जी, जयपुर के हैं, मुझे तो पूरा पता नहीं है, लेकिन मेरे अनुमान से मध्यम वर्ग के ही होंगे।

तीसरी : तो क्या अविनाशजी ने सहज रूप से ये स्वीकार कर लिया ?

पहली : क्या करते बेचारे, बहुत समझाने के बाद भी जब अचल टस से मस नहीं हुआ तो मजबूर होकर के अविनाश जी की बात तो क्या आर्या तक को प्रसन्नता से मध्यम वर्ग की लड़की से शादी करनी पड़ी।

दूसरी : सच में अचल जैसा बेटा सबके हो तो दुनिया का उद्धार हो जाये।

(चार महिलाओं के मुख से अचल की प्रशंसा सुनकर आस्था के भी चुप रहने के विचार दृढ़ बनने लगते हैं।)

(एक दिन आर्या अचल को आस्था के बारे में बहुत सारी बातें सुनाती हुई।)

आर्या : अचल, मैं तो भगवान् से कई बार प्रार्थना करती हूँ कि इस आस्था से मेरा पल्ला कब छूटेगा। हे भगवान्! क्या मैं जिन्दगी भर इसके कारण घुटती ही रहूँगी ? हे प्रभो! या तो तू आस्था को उठा ले और यदि तू आस्था को नहीं उठाता है तो मुझे ही उठा ले।

अचल : माँ, क्यों तू मरने की भावना करती हो ? मरकर पता नहीं कौन-सी गति होगी, वहाँ कौन-सा सुख मिल जायेगा, यदि अपन मरकर कुत्ता, सुअर आदि बन गये तो फिर दु:ख का पार ही नहीं रहेगा। अतः माँ आप कभी मरने की भावना नहीं किया करो। दूसरी बात अपनी भावनाओं से क्या कोई मर सकता है, क्या भगवान् से प्रार्थना करने से भगवान् किसी को उठा लेता है। जिसकी जब मौत आती है आदमी अपने-आप मरता है हम क्यों स्वयं मरें और क्यों किसी के मरने की भावना करने के पाप का भार लें ?

आर्या : बेटा, बात तो सही है कि किसी के कहने से कोई मरता नहीं है, लेकिन कोई अत्यधिक परेशान कर दे तो क्या किया जा सकता है ?

अचल : फिर भी माँ मैं आपकी बात से सहमत नहीं हूँ। (इस प्रकार कहता हुआ उठकर चला जाता है।)

(आज रात्रि में लगभग 11 बजे अचल एक तकिया लेकर लकड़ी से मारता है आस्था एक-दो बार चिल्लाती है। आस्था की चीख से आर्या की नींद खुल जाती है। आर्या अचल के कमरे के बाहर खड़ी होकर सुनती है। आर्या की आहट सुनकर आस्था सिसकी ले-लेकर रोने के एक्शन करती है। इसकी सिसकियाँ सुनकर आर्या को थोड़ा संतोष होता है। दो-चार दिन घर का माहौल गम्भीर रहता है। अचल और आस्था आर्या के सामने ऐसे रहते हैं, जैसे उनकी आपस में बोल-चाल ही बंद है।)

(इन दिनों आर्या प्रसन्न सी नजर आती है।)

(एक दिन आर्या और आस्था बैठी बैठी बातें कर रही हैं।)

आर्या : (व्यंग करती हुई) बेटी, आस्था, आजकल तो तुम कुछ बोलती ही नहीं हो। क्या अचल से तुम्हारी लड़ाई हो गई है ?

क्या अचल ने तुम्हें डाँटा है.....।

आस्था : नहीं, मम्मीजी, उनका डाँटना और लड़ना तो बहुत दूर वे तो कभी मुझे तू तक नहीं कहते हैं यदि मैं कुछ गलती कर दूँ तो मुझे समझाते ही हैं।

आर्या : सच में आस्था, अचल पर तेरी और मेरी बातों का प्रभाव ही कहाँ पड़ता है, वह तो अपनी बातें सुनते हुए भी ऐसा लगता है कि बहरा हो गया हो।

(बातों ही बातों में)

आर्या : आस्था, मुझे तो ऐसा लगता है कि जब से अचल की शादी हुई अचल तो पराया ही हो गया है, वो भी क्या करे उसको संगति ही ऐसी मिली कि उसको पराया होना पड़ा।

(आस्था चुपचाप सुनती रहती है फिर बात पलटती हुई।)

आस्था : मम्मी जी, कल निर्मला आंटी ने एक अच्छी बात बताई थी मैं तो आपको बताना भूल ही गई।

आर्या : वाह आस्था, आजकल तो तू बड़ी चतुर हो गई हो, क्या बात पलट रही हो, मेरी बात का उत्तर क्यों नहीं देती हो ?

(आस्था आर्या की कड़वी बात सुनकर भी मौन रहती है। उसको अचल की बातें याद आती रहती हैं कि यदि मैं कुछ भी जवाब नहीं दूँगी तो झगड़ा नहीं होगा।)

आर्या : क्यों री, आजकल तू बहरी हो गई हो या गूंगी या पत्थर की हो गई हो, जो किसी की बात का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता है।

(तभी अचल आ जाता है, आर्या का बोलना बन्द हो जाता है।)

(अचल और आस्था अपने कमरे में)

आस्था : (अचल से) आज तो मैंने आपकी दवाई खाई, लेकिन बहुत कड़वी थी।

अचल : (आश्चर्य से) आस्था, मेरी दवाई, कौन-सी बीमारी की खाई,

मैं तो कोई दवाई जानता भी नहीं हूँ, मैंने तो किसी को कोई दवाई दी ही नहीं है।

आस्था : नहीं, आपने उस दिन मुझे कहा था कि मम्मी कुछ भी कहें तो बोलना नहीं। आज मम्मी ने मुझे इतना कड़वा कहा कि सीधा जाकर हृदय में चुभे, तो भी मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

अचल : (खुश होते हुए) वाह, आस्था वाह! क्या तूने सच में माँ को कुछ भी जवाब नहीं दिया। यदि तूने सच में माँ को कोई जवाब नहीं दिया होगा तो मैं तेरे लिए दो तोले सोने की चैन बनवाऊँगा।

आस्था : क्या, आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं है ?

अचल : आस्था, तेरी बात पर विश्वास तो होता है, लेकिन ....(कह कर रुक जाता है।)

आस्था : तो क्या मैं ऐसा कर सकती हूँ ये विश्वास नहीं होता ?

अचल : आस्था, हाँ, अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम अब कभी भी मम्मी को बराबरी से जवाब नहीं दोगी। और शायद मेरे अनुमान से तो तुम दोनों में अब कभी लड़ाई नहीं होगी।

(एक दिन आस्था की शिकायत करती हुई।)

आर्या : अचल! आजकल तो आस्था बिल्कुल गूंगी और बहरी हो गई है। ऐसा लगता है कि वह दिन-दिन ढीठ होती जा रही है। कुछ कहो कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता उस पर। तू तो एक बार मेरा कहना मान ले उसे जयपुर छोड़ आ।

प्लीज बेटा कम से कम मैं जीवित हूँ तब तक तू इसे छोड़ आ। मेरे मरने के बाद भले ही इसे वापस ले आना।

अचल : माँ, आप तो गजब ही करती हो, पहले आप हमेशा आस्था के जवाब देने की शिकायत करती थी अब आप उसके नहीं बोलने की शिकायत कर रही हो, आखिर आप करना क्या चाहती हो। मुझे तो कुछ समझ में ही नहीं आता है। आप

सोचें यदि मैं आपके कहने से आस्था को जयपुर छोड़ आऊँगा तो उसको उसके माता-पिता, भैया आदि को कैसा लगेगा ? और ऐसे ही यदि अपनी कृति को भी जवाईजी अपने घर छोड़ जायेंगे तो आपको कैसा लगेगा ?

(अचल की बात सुनकर बात पलटती है।)

आर्या : नहीं अचल, मैं ऐसा नहीं कह रही हूँ, मेरे कहने का भाव यह नहीं है मेरे कहने का मतलब तो यह है कि थोड़े दिन उसको पीहर छोड़ आओ तो वह थोड़ी डर जायेगी, थोड़ी उसकी अकल ठिकाने आ जाएगी।

अचल : माँ, आप तो बहुत ही चतुर हैं, आपने भी क्या बात पलटी ?

अविनाश : (बात सुनकर) आज माँ-बेटे में क्या युद्ध छिड़ गया, मुझे तो कुछ समझ में ही नहीं आता है कि तुम लोगों में रोज-रोज क्या हो जाता है? क्यों तुम तू-तू मैं-मैं करते रहते हो ?

आर्या : (धीरे से) आप भी विचित्र व्यक्ति हो जब देखो माँ-बेटे की बात को ही लड़ाई मान बैठते हो।

अविनाश : आर्या! मुझे तो लगता है कि तू हर-समय लड़ने को तैयार रहती हो, थोड़ा-सा निमित्त मिला की लड़ाई शुरू।

आर्या : चलो, अब उपदेश नहीं दो। मैं लड़ने के लिए तैयार रहती हूँ तो आप उपदेश देने को।

(अचानक मधुर और भावेश आ जाते हैं। माहौल शान्त हो जाता है, दोनों आर्या एवं अविनाश के चरण छूते हैं।)

(दोनों एक साथ आशीर्वाद देते हुए)

आर्या : बेटा, अबकी बार तो तुम बहुत दिनों के बाद नजर आ रहे हो ?

मधुर : नहीं माँ, मैं तो अभी दो-तीन दिन पहले ही आया था लेकिन आप घर में नहीं थीं।

(इस प्रकार थोड़ी देर बातें करके अचल आदि घर के बाहर निकल जाते हैं।)

मधुर : मित्र अचल, मुझे तो सुप्रिया इतनी अच्छी लगती है कि मैं उसे एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ूँ।

अचल : (गम्भीरता से) मधुर, सुप्रिया में ऐसी कौन-सी विशेषता है, जिससे तुम्हें वह अच्छी लगती है ?

मधुर : मुझे तो संसार में सुप्रिया से बढ़कर सुन्दर और कोई लड़की ही नहीं दिखती है।

अचल : तो क्या सुप्रिया और कृति के रूप रंग में बहुत अन्तर है।

मधुर : अपनी कृति सुन्दर है भाभी भी सुन्दर है लेकिन....।

अचल : (मुस्कुराते हुए) शायद तुम उस पर मुग्ध हो ?

(मधुर अपनी दृष्टि नीचे कर लेता है।)

भावेश : मित्र अचल, मुझे तो लगता है कि यह उससे अश्लील प्रेम करता है।

अचल : हाँ, भावेश, लगता तो मुझे भी ऐसा ही है लेकिन क्या इसके जैसे सज्जन युवक के लिए किसी लड़की पर गलत दृष्टि डालना उचित है ?

भावेश : हाँ, अचल तुम्हारा कहना सत्य है, लेकिन क्या मधुर की किसी लड़की से शादी नहीं होगी ? जब उसकी शादी होनी ही है तो वह किसी लड़की से प्रेम करे, इसमें क्या गलती है ?

अचल : भावेश, शादी एक अलग चीज है, वह हमारी भारतीय संस्कृति है। शादी करने वाला पापी-व्यभिचारी नहीं कहलाता। वह रावण के समान कलंकित नहीं होता, परन्तु अश्लील प्रेम करने वाले की एक दिन पिटाई अवश्य होती है।

मधुर : तो क्या कोई स्वयं किसी लड़की का चुनाव करके शादी नहीं कर सकता ?

अचल : किसी लड़की का चुनाव करके शादी करना कोई बुरी चीज नहीं है, लेकिन किसी लड़की पर गलत दृष्टि डालना तो अच्छा काम नहीं कहा जा सकता है।

(मधुर चुपचाप सुनता रहता है।)

अचल : हम सोचें, यदि कोई हमारी बहिन को गलत-दृष्टि से देखे, उसके साथ छुपकर मिलना, खाना-पीना, घूमना आदि काम करे तो हमें कैसा लगेगा ? क्या हम उसको सहन कर पायेंगे। हमारे जैसे सभ्य लोगों को स्त्री के शील की रक्षा करना चाहिए या छेड़-छाड़ करना चाहिए।

(भावेश और मधुर एक दूसरे को देखते रहते हैं।)

अचल : सभ्य व्यक्ति को हमेशा अपने से छोटी लड़की को पुत्री, बड़ी को माँ एवं बराबरी की उम्र वाली लड़की को बहिन की दृष्टि से ही देखना चाहिए। यही हमारा धर्म है। इसी धर्म के पालन से सीता के अग्नि का पानी हो गया था। इसी धर्म से सेठ सुदर्शन की सूली भी सिंहासन बन गई।

(अचल की इन सब बातों का मधुर पर अच्छा प्रभाव पड़ा। वह मन ही मन में परस्त्री सेवन अर्थात् किसी भी लड़की को छेड़ने का त्याग कर देता है।)

(एक दिन जयपुर में अचल के ससुर श्रीमान आदित्य जी को हार्ट का दौरा पड़ता है। डॉक्टर बाईपास सर्जरी करवाने की सलाह देते हैं, लेकिन चैत्य के पास इतना पैसा नहीं है कि वह पिताजी को मद्रास ले जा सके। इसलिए अचल से सलाह लेने के लिए फोन करता है।)

चैत्य : जीजाजी! जयजिनेन्द्र, कल रात में पिताजी का स्वास्थ्य अचानक बिगड़ गया था। डॉक्टरों को दिखाया तो उन्होंने मद्रास ले जाकर बाईपास सर्जरी करवाने को कहा है।

अचल : (घबराते हुए) चैत्य, अब पापा का स्वास्थ्य कैसा है ? तुम चिन्ता नहीं करो। मैं अभी चार बजे की ट्रेन से आ रहा हूँ। जैसा उचित लगेगा वैसा अपन लोग मिलकर कर लेंगे।

(अचल हजार-हजार के 50-60 नोट बैग में रख रहा है।)

आर्या : अचल, तुम आज अचानक इतने सारे नोट बैग में क्यों रख रहे हो, क्या कहीं खरीदी करने जा रहे हो ?

अचल : माँ, अभी थोड़ी देर पहले जयपुर से चैत्य का फोन आया था। अचानक पापाजी को हार्ट का दौरा पड़ गया है। उन्हें शायद मद्रास ले जाना पड़े इसलिए सोचा थोड़े पैसे रख लेता हूँ। पता नहीं वहाँ कितने पैसों की आवश्यकता पड़ जावे।

आर्या : (व्यंग करते हुए) अच्छा तो तू अपने डेडी की खून-पसीने की कमाई उनके लिए खर्च करेगा ?

अचल : माँ, ये कोई खर्च थोड़ी कहलाता है। यह तो दुःख के समय की बात है फिर उनके पास इतना पैसा है भी नहीं है कि वे मद्रास ले जाकर इलाज करवा दें, वो क्या यदि किसी गरीब अनजान व्यक्ति के भी बीमार पड़ने की खबर मुझे लगती तो मैं उसके लिए भी इतना पैसा खर्च कर देता।

आर्या : (ठहाका लगाते हुए) वा भाई वा अचल तुमने भी क्या अपनी सफाई पेश की है। मुझे पता है कि तुम गरीबों की कितनी सेवा करते हो, अपनी ससुराल वालों के लिए पैसे खर्च करने हैं तो झट से बहाना बना लिया।

अचल : नहीं, मम्मी, ये आपका भ्रम है कि मैं जयपुर वालों के लिए बहुत पैसा खर्च करता हूँ।

आर्या : (जोर से) भ्रम नहीं, यह सत्य है अचल, यदि नहीं तो रख दे पैसा का बैग यहीं। न जयपुर जाने की आवश्यकता है और न एक भी पैसा ले जाने की। सबके अपने-अपने काम हैं दुनियाँ में ऐसे सैंकड़ों लोग हैं, सबकी अपनी-अपनी परिस्थितियाँ होती हैं।

(माँ को गरम देखकर अचल वहाँ से चला जाता है। अचल आदित्यजी को मद्रास ले जाकर ऑपरेशन करवाता है। उनका स्वास्थ्य ठीक हो जाता है।)

(एक दिन घबराती हुई आर्या अचल के कमरे का दरवाजा

खटखटाती हुई।)

आर्या : बेटा अचल! उठो जल्दी से गाड़ी निकालो, बैग में एक-डेढ़ लाख रुपये रखो और शीघ्रता से चलो।

अचल : (दरवाजा खोलते हुए) माँ, क्या हो गया आप तो बहुत घबरा रही हैं।

आर्या : बेटा, अभी-अभी मामा का फोन आया था। छोटे मामा का भयंकर एक्सिडेन्ट हो गया है, उसको मुम्बई ले जा रहे हैं, चलो अपन भी चलते हैं। अचानक जाना पड़ रहा है, इसलिए पता नहीं उनके पास तत्काल में कुछ व्यवस्थाएँ होगी या नहीं होगी। तुम रुपया-पैसा, कपड़े आदि रखो तब तक मैं थोड़ा नास्ता तैयार कर लेती हूँ।

अचल : हाँ माँ, आप नास्ता तैयार करो, मैं आस्था को भी तैयारी करने के लिए कह देता हूँ वह भी चलेगी तो मामाजी को कुछ सहायता मिल जायेगी।

आर्या : नहीं बेटा, आस्था को साथ लेने की क्या आवश्यकता है फिर यहाँ बच्चों को कौन सम्हालेगा ?

अचल : माँ, वहाँ मामा-मामी आदि तीन-चार लोगों को तो साथ में ही जाना पड़ेगा। फिर घर में नानाजी का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। नानीजी वृद्ध हैं, उनकी सेवा कौन करेगा। नहीं होगा तो आस्था को नानीजी के पास छोड़ देंगे। वह घर भी सम्हाल लेगी और नानाजी के साथ भी रह लेगी।

आर्या : तो फिर अपने बच्चों का क्या होगा ?

अचल : बच्चों के लिए मैं मधुर को कह देता हूँ, वह उसके यहाँ रह लेंगे। भाभी भी अच्छी हैं, टिफिन भी लगा देगी और बच्चों को स्कूल भेजना, होम-वर्क करवाना आदि सब कर देगी।

(आर्या, आस्था, अविनाशजी आदि सभी गिरीडीह चले जाते हैं। अचल एक-डेढ़ लाख रुपया खर्च करता है। मामा का

स्वास्थ्य ठीक हो जाता है।)

(एक दिन अविनाश, आर्या, अचल, आस्था आदि सब बैठे-बैठे बातें कर रहे हैं।)

अविनाश : बेटा अचल! गिरीडीह में कितना पैसा खर्च हुआ था ?

अचल : डेडी, ज्यादा खर्च नहीं हुआ, मात्र एक-डेढ़ लाख रुपया खर्च हुआ था।

अविनाश : क्या मामा ने पूरा पैसा वापस कर दिया ?

(अचल कुछ भी उत्तर नहीं देता है।)

अविनाश : तो क्या मामा ने तुम्हें पैसा वापस नहीं दिया या तूने उन्हें बिल बताया ही नहीं ?

अचल : डेडी, मामाजी बच गये मैं तो यही बड़ी बात मानता हूँ। पैसों में क्या है, पैसे तो वैसे ही इधर उधर बहुत से खर्च होते रहते हैं।

अविनाश : तो क्या तू मामाजी से पैसे वापस नहीं लेगा ?

आर्या : आप भी कैसी बातें करते हैं बीमारी के समय खर्च किया हुआ पैसा भी क्या वापस माँगा जाता है, यदि सामने वाले की गुंजाइश होती है तो वह स्वयं ही खर्च नहीं करने देता है और यदि कोई खर्च करे तो तत्काल वापस दे ही देता है।

अविनाश : आर्या, क्या तेरे भाई के पास पैसे की कमी है, जो उसने अचल को पैसे देने के लिए कहा तक नहीं।

आर्या : और क्या, मेरे भैय्या के पास इतना पैसा ही कहाँ है ? बेचारे के जब देखो खर्चे पर खर्चा होता ही रहता है। कभी पिताजी की तबियत खराब हो जाती है तो कभी बच्चों की और भाभी की तो हमेशा ही तबियत खराब रहती है। दोनों भैय्या मिलकर जितना कमाते हैं, उससे ज्यादा तो खर्चा हो ही जाता है।

अविनाश : वा! बस तेरे भैय्या के पास तो पैसा नहीं है, समय पर अचल ने सहायता की। उसको वापस देने की आवश्यकता भी नहीं समझती हो और उस दिन अचल जयपुर जा रहा था तो पैसे

का बेग रखवा दिया था तथा वहाँ जाने के लिए मना कर दिया था।

आर्या : तो क्या मेरे मना करने से अचल जयपुर नहीं गया ?

अविनाश : अचल जयपुर गया या नहीं गया यह बात अलग है लेकिन तुमने तो एक बार मना कर ही दिया था।

अचल : नहीं डेडी, माँ ने जयपुर जाने के लिए मना नहीं किया था। माँ तो मेरा मन देख रही थी कि वास्तव में मैं जयपुर जाना चाहता हूँ या नहीं ? इसलिए तो मेरे चले जाने पर भी कुछ नहीं कहा।

(एक बार दीपावली का समय था। आस्था ने आज पहली बार हीरे का हार एवं नीलम के आभूषण पहने थे)

(आस्था के आभूषण देखकर व्यंग करती हुई।)

आर्या : ओहो! आस्था आज तो तूने ये नये आभूषण पहली बार पहने हैं। क्या तेरे पिताजी ने अबकी बार रक्षाबन्धन के उपलक्ष्य में ये आभूषण दिये हैं ?

आस्था : (पहेलियाँ बुझाती हुई)मम्मीजी, पापा ने तो ये आभूषण नहीं दिये हैं, लेकिन पापा के जवाई जी ने अवश्य दिये हैं। (हार देती हुई)लो मम्मीजी ये हार आप पहन लो।

(आस्था की बात सुनकर)

आर्या : (गुस्से में) चुप हो जा, मुझे पता है कि तू कितनी चतुर और चोर है, छली कहीं की, मेरे से मजाक करती है धूर्त्ता, उस दुष्ट अचल ने गहने लाने के पहले मुझे पूछा तक नहीं और न ही लाने के बाद बताए ही। आजकल तो वह भी पक्का बीबी का गुलाम हो गया है। ये तक नहीं देखता है कि अपने पास कितना पैसा है ? बीबी का आदेश मिला कि फोरन लाखों के आभूषण लाकर दे दिये। मूर्ख कहीं का।

(इस प्रकार बहुत देर तक आर्या बड़बड़ाती रहती है आस्था

थोड़ी देर वही खड़ी खड़ी सुनती रहती है फिर अपने कमरे में चली जाती है।)

(शाम को जब अचल घर आता है तो उसे देखकर)

आर्या : क्यों रे मूर्ख, तूने इतने महंगे भाव के गहने कहाँ से बनवाये, किसके घर से चोरी करके पैसा लाया था। पहले ही मैंने कहा था कम से कम 20-25 लाख देने वाले की लड़की से शादी कर तब तो माना नहीं, अब बीबी को आभूषण पहनाने की सूझी है।

अचल : माँ, मैं पैसा कहीं से चोरी करके नहीं लाया था। कुछ दिन पहले एकदम माल का भाव आ गया। मैंने तत्काल माल बेच दिया उसमें बहुत मुनाफा हुआ तो मैंने सोचा कुछ अचल सम्पत्ति खरीद ली जावे तो भविष्य के लिए अच्छा होगा। इसीलिए सोना खरीदना था सो आभूषण बनवा लिए। फिर मैंने कोई आस्था के नाम से ही आभूषण नहीं बनवाये। आप भी पहनना आस्था भी पहनेगी और आवश्यकता पड़ने पर इनका उपयोग कर लेंगे।

आर्या : चुप रह, मैं ये मुनाफा-बुनाफा नहीं सुनना चाहती। मैं तो यह कह रही हूँ कि यदि तू किसी करोड़पति बाप की बेटी से शादी करता तो न उस दिन जयपुर जाकर पैसा खर्च करना पड़ता और न ही आज ये आभूषण बनवाने पड़ते अपितु तेरे लिए ही बहुमूल्य आभूषण वहाँ से आ जाते।

अचल : माँ, आप क्यों चिन्ता करती हो भले ही मैंने करोड़पति बाप की बेटी से शादी नहीं की लेकिन मैं करोड़पति बाप का बेटा तो हूँ। आप कहो तो मैं आपको पूरी सोने से जड़ दूँ। आपकी आज्ञा तो मिले।

आर्या : (शान्त होती हुई) अचल, पहले तू यह बता कि तूने ये आभूषण मुझे क्यों नहीं दिखाए ?

अचल : माँ, जिस दिन मैं ये आभूषण लाया था, आप मामा के घर गई

थीं और आस्था भी जयपुर गई थी। दो दिन पहले जब मैंने आस्था को वे आभूषण बताये तब भी आप घर में नहीं थीं।

आर्या : कुछ नहीं, लेकिन कल की तारीख तक पूरे आभूषण मेरे पास आ जाने चाहिए। कोई आवश्यकता नहीं है। जिसने कभी हीरे-पन्नों का नाम ही नहीं सुना होगा ऐसे दरिद्र की बेटी को इतने मूल्यवान आभूषण देने की।

अचल : ठीक है, मम्मी कल नहीं आज ही मैं ये सब आभूषण लाकर आपको दे दूँगा लेकिन आप यह ठीक नहीं कर रही हैं। आप स्वयं सोचें यदि आप आस्था के साथ ऐसा व्यवहार करेगी तो वृद्धावस्था में आस्था आपकी सेवा कैसे करेगी ?

आर्या : रहने दे सेवा को, मुझे पता है कि आस्था मेरी कितनी सेवा करती है और कितनी करना चाहती है। मैं भले ही उसे सोने से मढ़ दूँ तो भी वह मेरी सेवा नहीं कर सकती है।

अचल : मम्मी आस्था कितनी भी खराब हो लेकिन समय पर तो अपने वाले ही काम आते हैं मुझे तो विश्वास है कि आवश्यकता पड़ने पर आस्था ही आपकी सेवा करेगी।

आर्या : तो क्या, आवश्यकता पड़ने पर तू मर जाएगा जो आस्था सेवा करेगी। मुझे नहीं करवानी तेरी आस्था से सेवा। तू नहीं करेगा तो मैं पैसा देकर चार आदमियों से काम करवा लूँगी। मुझे कोई गरज नहीं है आस्था की। पास में पैसा हो तो सौ लोग तैयार रहते हैं सेवा करने को।

(तभी अविनाश एवं कृति आ जाते हैं।)

अविनाश : क्या हो गया, कौन सी ऐसी आफत आ गई जो सेवा की आवश्यकता पड़ गई ?

आर्या : सेवा की आवश्यकता तो नहीं पड़ी लेकिन अचल मुझे उपदेश दे रहा था कि आवश्यकता पड़ने पर अपने वाले ही काम आते हैं इसलिए आस्था ही मेरी सेवा करेगी।

अविनाश : तो अचल ने इसमें क्या गलत कहा ? आवश्यकता पड़ेगी तब

आस्था को ही तेरी सेवा करनी पड़ेगी।

कृति : हाँ, डेडी बात सही है आखिर कौन करेगा ? अड़ोस-पड़ोस रिश्तेदार और मैं भी कितनी मम्मी के पास रुक सकती हूँ। सबके अपने-अपने घर के काम भी तो रहते हैं इसलिए मम्मी की सेवा आस्था भाभी ही करेगी।

(तभी आस्था आ जाती है।)

आस्था : (कृति को देखकर हँसती हुई) दीदी जयजिनेन्द्र, आप कब आ गई, मुझे तो पता ही नहीं था कि आप आ रही है, पहले पता चल जाता तो भैय्या को स्टेशन पर भेज देती।

कृति : हाँ भाभी, मैंने फोन तो लगाया था लेकिन लाइन क्लीयर नहीं थी इसलिए बात नहीं हो पाई थी, फिर भी आज अचानक ट्रेन से उतरते ही डेडी स्टेशन पर मिल गये थे उनके ही साथ आ गई।

आस्था : अच्छा दीदी चलो नहा धोकर दूध पी लो, नास्ता कर लो।

कृति : हाँ भाभी चलो, मैं अभी आती हूँ। भाभी नास्ते में ब्रेड-बिस्किट मत लगाना। मैंने इनका त्याग कर दिया है।

आर्या : बेटी कृति, तूने इनका त्याग कैसे कर दिया। पहले तो तू हमेशा यही चीजें खाती थी।

कृति : हाँ, मम्मी पहले मैं ब्रेड़-बिस्किट खाती थी लेकिन अब समझ में आ गया। एक दिन एक आर्यिकाश्री ने इनके बनने की विधि बताई थी, तब समझ में आया कि ब्रेड-बिस्किट कितने हिंसात्मक तरीके से बनते हैं फिर थोड़े दिन बाद मैंने टी.व्ही. पर भी इनको बनते हुये देखा तो मुझे पूज्य आर्यिकाश्री की बात पर पूरा विश्वास हो गया कि उन्होंने सच ही बताया था इसीलिए मैंने उसी दिन से इनका त्याग कर दिया। बच्चों को बताया तो उन्होंने भी खाना बन्द कर दिया। मैं तो कहती हूँ कि मम्मी आप भी त्याग कर दो।

(एक बार अचानक आर्या का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। अचल उसे हॉस्पिटल ले जाता है। आर्या को बॉटल वगैरह चढ़ती हैं वह कुछ सचेत होती है।)

अचल : मम्मी, अब आपको ठीक लग रहा है ?

आर्या : हाँ, बेटा कुछ ठीक लग रहा है।

अचल : माँ, मैं मंदिर जा रहा हूँ। मंदिर में महाराज जी भी हैं, मैं आपके लिए आशीर्वाद लेकर आता हूँ आप बहुत जल्दी ठीक हो जायेगी।

आर्या : (मुँह बनाती हुई) बेटा, मैं यहाँ अकेली रह जाऊँगी। तू महाराज के पास जा रहा है पता नहीं महाराज तुम्हें कितनी देर तक रोक लेंगे। तू दो-तीन दिन के बाद चले जाना तब तक मेरा स्वास्थ्य ठीक हो जायेगा।

अचल : ठीक है मम्मी, लेकिन उधर ही फल लेने तो जाना ही है सो मैंने सोचा भगवान् के दर्शन भी कर लूँगा और महाराज से आशीर्वाद भी ले आऊँगा।

आर्या : (उदास मन से) ठीक है चला जा, लेकिन जल्दी आ जाना, बहुत देर तक महाराज के पास मत बैठे रहना।

अचल : हाँ, मम्मी मैं जल्दी ही आ जाऊँगा।

(अचल मंदिर के दर्शन करके महाराज के पास जाता है।)

अचल : नमोऽस्तु महाराज जी (चुपचाप बैठ जाता है।)

(5-7 मिनट में महाराज शास्त्र बन्द करके कायोत्सर्ग कर लेते हैं।)

(शास्त्र बन्द करने पर अचल पुनः नमोऽस्तु करता है।)

महाराज : अचल, आज तुम कहाँ से आ गये, बहुत दिनों के बाद दिखे हो ?

अचल : जी महाराज, मैं भी चाहता तो हूँ कि हमेशा आपके दर्शन करने आऊँ लेकिन समय नहीं मिल पाता है।

महाराज : तो आज समय कैसे मिल गया, आज तो रविवार भी नहीं है।

अचल : महाराज, दो-चार दिन से मेरी मम्मी का स्वास्थ्य बहुत खराब हो रहा है। मम्मी हॉस्पिटल में एडमिट है। आज मैंने सोचा फल लेने मैं ही चला जाता हूँ। भगवान् के दर्शन भी कर लूँगा और मम्मी के स्वास्थ्य के लिए आपका आशीर्वाद भी ले लूँगा।

महाराज : (आशीर्वाद देते हुए)बेटा! तुम मम्मी को मेरी भावना, वैराग्य भावना आदि पाठ सुनाया करो और मम्मी से कहना कि णमोकार मंत्र का जाप किया करें।

अचल : जी, महाराजजी कह दूँगा और कुछ बताइये महाराजजी जिससे मेरी मम्मी जल्दी ठीक हो जायें।

महाराज : तो क्या मम्मी सीरियस हैं ?

अचल : सीरियस तो नहीं हैं, लेकिन कभी-कभी तो ऐसा लगने लगता है कि मम्मी अब नहीं बच पायेगी।

(ऐसा कहते-कहते अचल की आँखों में पानी भर आता है।)

महाराज : (आश्वासन देते हुए) बेटा चिन्ता नहीं करो, तुम्हारी मम्मी बहुत ही जल्दी ठीक हो जाएगी। सुनो यदि मम्मी से णमोकार मंत्र नहीं बोला जाय तो उसे कहना ॐ ही बोलें...।

अचल : जी महाराज, आप आशीर्वाद दे दीजिए। आपके आशीर्वाद से ही मेरी मम्मी ठीक हो जायेगी।

(आशीर्वाद लेकर अचल हॉस्पिटल में आता है, आर्या की हालत गम्भीर देखकर)

अचल : मम्मी, महाराज ने आपको आशीर्वाद दिया है।

(आर्या थोड़ी सी आँखें खोलती है और फिर आँखें बन्द कर लेती है।)

अचल : मम्मी आप णमोकार मंत्र बोलो (ऐसा कहकर अचल, आस्था, अविनाश आदि सभी जोर-जोर से णमोकार मंत्र पढ़ते हैं।)

''णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥''

(णमोकार मंत्र की ध्वनि से आर्या को थोड़ी शान्ति सी मिलती है। आर्या एकाग्र होकर णमोकार मंत्र सुनती है और धीरे-धीरे णमोकार मंत्र बोलती है।)

(आर्या के मुख से णमोकार मंत्र सुनकर सबको प्रसन्नता होती है।)

आर्या : बेटा, कब तक यह णमोकार मंत्र सुनाते रहोगे, थोड़ी देर रेडियो चलाकर एक-आध गीत तो सुना दो।

(अचल चुपचाप रेडियो चला देता है। गीत सुनते-सुनते आर्या की नींद लग जाती है।)

(अचल रेडियो बन्द करके णमोकार मंत्र की केसिट चालू कर देता है।)

(आर्या की नींद खुलती है।)

आर्या : बेटा अचल, यह णमोकार मंत्र कौन गा रहा है ?

आस्था : (सहलाती हुई) हाँ मम्मीजी, क्या हुआ, यह णमोकार मंत्र की केसिट चल रही है।

आर्या : आस्था तू अकेली मेरे पास बैठी है अचल और डेडी कहाँ गये ?

आस्था : मम्मीजी, वे दोनों सो रहे हैं। क्या कुछ काम है, काम हो तो बता दो, मैं ही कर दूँगी।

आर्या : आस्था, मुझे पता है कि तू मेरा कितना और कैसा काम कर देगी, तू तो अचल को बुला दे।

आस्था : मम्मीजी, उनको तो मैं बुला दूँगी। लेकिन थोड़ी सेवा मैं ही कर दूँगी तो क्या हो जायेगा, आप मेरी भी मम्मीजी हैं।

आर्या : आस्था तू ज्यादा बातें मत कर, पहले मैं कह रही हूँ वो कर।

(आस्था चुपचाप जाकर अचल को जगाती है।)

अचल : (आँखें मसलते हुए) क्या हो गया, क्या मम्मी का थोड़ा-सा

काम तू नहीं कर सकती ?

आस्था : (गुस्से में) मैं अब कभी मम्मी का काम नहीं करूँगी।

अचल : (गुस्से में) क्या हो गया, इतना गुस्सा क्यों हो रही हो, क्या इतने से दिन में थक गई, क्या मेरी मम्मी की सेवा करने में तुम्हें इतनी तकलीफ होती है ?

आस्था : (रोती हुई) मैंने आज मम्मी से कहा कि मुझे ही काम बता दो, मैं ही कर दूँगी तो मम्मी ने मुझे बहुत जोर से डाँटते हुए 100 बातें सुना दी।

अचल : (जोर से) झूठ बोलती हो, तुझे तो मम्मी की हर बात डाँट ही लगती है।

(आस्था चुपचाप रोती रहती है।)

आस्था! तू भले ही रो या हँस, माँ की सेवा तुझे ही करनी होगी।

आस्था : मैंने कब कहा कि मैं सेवा नहीं करूँगी लेकिन सामने वाला सेवा करवाना चाहे तो।

अचल : मेरी माँ सेवा करवाना चाहे या नहीं चाहे, तुझे सेवा करनी ही होगी।

(एक दिन आर्या की हालत फिर से बिगड़ जाती है।)

आस्था जल्दी से पहले डॉक्टर को और फिर अचल को फोन करती है। आस्था का फोन पहुँचते ही अचल के पहले फेमली डॉक्टर आ जाता है। आस्था डॉक्टर को आर्या की पूरी स्थिति बताती है। डॉक्टर आर्या को इंजेक्शन लगाता है, बॉटल चढ़ाता है। कुछ ही देर में आर्या आँखें खोलती है तो सामने केवल आस्था और डॉक्टर था। केवल आस्था को देखकर वह चकित हो जाती है। उसके मन में आज पहली बार आस्था के प्रति विश्वास जागृत होता है कि वास्तव में वृद्धावस्था में आस्था ही उसकी सेवा करेगी।

आर्या : (आस्था का हाथ पकड़कर) बेटी, क्या अचल अभी तक नहीं आया, तेरे डेडी भी नहीं आये।

आस्था : मम्मी, वे अभी नहीं आये, आते ही होंगे। अभी-अभी फोन आया था कि वे रास्ते में हैं आ ही रहे हैं।

(थोड़ी देर में अचल आ जाता है।)

आर्या : अचल अब मुझे विश्वास हो गया कि मेरी वृद्धावस्था में आस्था ही सेवा करेगी।

इस प्रकार एक समझदार बेटे ने जिस सास-बहू के 36 का आँकड़ा था, उसे 63 के अंक में परिवर्तित कर दिया।

समाप्त